अंक-89 कानपुर, बुधवार 29 मई 2024 पृष्ठ-8

दैनिक

आज का कानपुर

गर्मी की गहरी जुताई हेतु कृषकों को दिया गया प्रशिक्षण

आज का कानपुर

कानपुर । चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉ.आनंद कुमार सिंह के निर्देश के क्रम में कृषि विज्ञान केंद्र दलीप नगर द्वारा ग्राम औरंगपुर गहदेवा में कृषकों को गर्मी की गहरी जुताई विषय पर एक दिवसीय कृषक प्रशिक्षण आयोजित किया गया। इस अवसर पर मृदा वैज्ञानिक डा.खलील ख़ान ने बताया कि ग्रीष्मकालीन गहरी जुताई अपने खाली खेतों में अवश्य करें। डॉक्टर खान ने बताया कि आगामी फसल से अच्छी पैदावार लेने के लिए रबी फसल की कटाई के तुरंत बाद गहरी जुताई कर ग्रीष्म ऋतु में खेत को खाली रखना लाभप्रद होता है। उन्होंने कहा कि जहां तक संभव हो सके किसान भाई मिट्टी पलटने वाले हल से गहरी जुताई कर दें। खाली खेत में गहरी जुताई मई माह में अवश्य कर लें। इस गहरी जुताई से जो ढेला बनते हैं वे धीरे-धीरे हवा व बरसात के पानी से टूटते रहते हैं। साथ ही जुताई से मिट्टी की सतह पर पड़ी फसल अवशेष की पत्तियां पौधों की जड़ें एवं खेत में उगे हुए खरपतवार आदि नीचे तक जाते हैं। जो सड़ने के बाद खेत की मिट्टी में कार्बनिक खादों/ जीवांश पदार्थ की मात्रा में बढ़ोतरी करते हैं इससे भूमि में वायु संचार एवं जल धारण क्षमता बढ़ जाती है। गहरी जुताई से गर्मी में तेज धूप के कारण कीड़े मकोड़े एवं बीमारियों के जीवाणु खत्म हो जाते हैं। मृदा वैज्ञानिक ने बताया कि ग्रीष्मकालीन जुताई से जलवायु का प्रभाव सुचारु रुप से मिट्टी में होने वाली प्रक्रियाओं पर पड़ता है और वायु तथा सूर्य के प्रकाश की सहायता से मिट्टी में विद्यमान खनिज अधिक सुगमता से पौधे भोजन के रूप में ले लेते हैं। इस अवसर पर केन्द्र के प्रभारी डा.अजय कुमार सिंह ने बताया कि किसान भाइयों को गर्मी की जुताई दो-तीन वर्ष में एक बार अवश्य कर देनी चाहिए । डॉक्टर सिंह ने बताया कि अनुसधान के परिणामों में यह पाया गया है कि गर्मी की जुताई से भूमि कटाव में 66.5% तक की कमी आई है। पशुपालन वैज्ञानिक डॉक्टर शशिकांत पशुओं में होने वाली बीमारियों एवं उनके प्रबंधन के बारे में विस्तार से जानकारी दी।गृह वैज्ञानिक डा निमिषा अवस्थी ने लघु उद्योग के बारे में जानकारी दी। जबकि गौरव शुक्ला ने प्रशिक्षण कार्यक्रम सफल बनाने में विशेष सहयोग प्रदान किया किसान उपस्थित रहे। इस अवसर पर 50 से अधिक किसानों ने सहभागिता की।

कानपुर व लखनऊ से एक साथ प्रकाशित वर्ष : 15 अंक :325 कानपुर, **बुधवार 29 मई 2024** नगर संस्करण पृष्ठ 12 मूल्य : 2.00 रुपए

राष्ट्रीय स्वरूप

गर्मी की गहरी जुताई के लिए किसानों को दिया गया प्रशिक्षण

कानपुर । सीएसए के कुलपति डॉ.आनंद कुमार सिंह के निर्देश के क्रम में कृषि विज्ञान केंद्र दलीप नगर द्वारा ग्राम औरंगपुर गहदेवा में कृषकों को गर्मी की गहरी जुताई विषय पर एक दिवसीय कृषक प्रशिक्षण आयोजित किया गया। इस अवसर पर मृदा वैज्ञानिक डा.खलील खान ने बताया कि ग्रीष्मकालीन गहरी जुताई अपने खाली खेतों में अवश्य करें। डॉक्टर खान ने बताया कि आगामी फसल से अच्छी पैदावार लेने के लिए रबी फसल की कटाई के तुरंत बाद गहरी जुताई कर ग्रीष्म ऋतु में खेत को खाली रखना लाभप्रद होता है। उन्होंने कहा कि जहां तक संभव हो सके किसान भाई मिट्टी पलटने वाले हल से गहरी जुताई कर दें। खाली खेत में गहरी जुताई मई माह में अवश्य कर लें। इस गहरी जुताई से जो ढेला बनते हैं वे धीरे-धीरे हवा व बरसात के पानी से टूटते रहते हैं। साथ ही जुताई से मिट्टी की सतह पर पड़ी फसल अवशेष की पत्तियां पौधों की जड़ें एवं खेत में उगे हुए खरपतवार आदि नीचे तक जाते हैं। जो सड़ने के बाद खेत की मिट्टी में कार्बनिक खादों/ जीवांश पदार्थ की मात्रा में बढ़ोतरी करते हैं इससे भूमि में वायु संचार एवं जल धारण क्षमता बढ़ जाती है। गहरी जुताई से गर्मी में तेज धूप के कारण कीड़े मकोड़े एवं बीमारियों के जीवाणु खत्म हो जाते हैं। मृदा वैज्ञानिक ने बताया कि अनुसधान के परिणामों में यह पाया गया है कि गर्मी की जुताई से भूमि कटाव में 66.5त्र तक की कमी आई है।

ने बताया कि ग्रीष्मकालीन जुताई से जलवायु का प्रभाव सुचारु रुप से मिट्टी में होने वाली प्रक्रियाओं पर पड़ता है और वायु तथा सूर्य के प्रकाश की सहायता से मिट्टी में विद्यमान खनिज अधिक सुगमता से पौधे भोजन के रूप में ले लेते हैं। इस अवसर पर केन्द्र के प्रभारी डा.अजय कुमार सिंह ने बताया कि किसान भाइयों को गर्मी की जुताई दो-तीन वर्ष में एक बार अवश्य कर देनी चाहिए । डॉक्टर सिंह पशुपालन वैज्ञानिक डॉक्टर शशिकांत पशुओं में होने वाली बीमारियों एवं उनके प्रबंधन के बारे में विस्तार से जानकारी दी।गृह वैज्ञानिक डा निमिषा अवस्थी ने लघु उद्योग के बारे में जानकारी दी। जबकि गौरव शुक्ला ने प्रशिक्षण कार्यक्रम सफल बनाने में विशेष सहयोग प्रदान किया किसान उपस्थित रहे। इस अवसर पर 50 से अधिक किसानों ने सहभागिता की।

राष्ट्रीय सहारा

कानपुर • बुधवार • 29 मई • 2024

ार्मी में गहरी जुताई से भूमि कटाव 66 .5 फीसद तक कम होना संभव

हारा न्यूज ब्यूरो

पुर।

खर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक वद्यालय (सीएसए) के कुलपति डॉ. कुमार सिंह के निर्देश पर कृषि विज्ञान लीप नगर द्वारा ग्राम औरंगपुर गहदेवा कों को गर्मी की गहरी जुताई विषय पर वसीय प्रशिक्षण दिया गया। विशेषज्ञों ने क गर्मी की गहरी जुताई से भूमि कटाव 5 प्रतिशत तक की कमी आई है।

स अवसर पर मृदा वैज्ञानिक डॉ. न खान ने वताया कि ग्रीष्मकालीन गहरी अपने खाली खेतों में अवश्य करें। : खान ने वताया कि आगामी फसल से पैदावार लेने के लिए रवी फसल की के तुरंत वाद गहरी जुताई कर ग्रीष्म । खेत को खाली रखना लाभप्रद होता होंने कहा कि जहां तक संभव हो सके

सीएसए के वैज्ञानिकों ने किसानों को दिया प्रशिक्षण

किसान मिट्टी पलटने वाले हल से गहरी जुताई कर दें। खाली खेत में गहरी जुताई मई माह में अवश्य कर लें।

इस गहरी जुताई से जो ढेला वनते हैं वे धीरे-धीरे हवा व वरसात के पानी से टूटते रहते हैं। साथ ही जुताई से मिट्टी की सतह पर पड़ी फसल अवशेष की पत्तियां, पौधों की जड़ें एवं खेत में उगे हुए खरपतवार आदि नीचे तक जाते हैं, जो सड़ने के वाद खेत की मिट्टी में कार्वनिक खादों जीवांश पदार्थ की मात्रा में वढ़ोतरी करते हैं। इससे भूमि में वायु संचार एवं जल धारण क्षमता वढ़ जाती है। गहरी जुताई से गर्मी में तेज धूप के कारण कीड़े-मकोड़े एवं वीमारियों के जीवाणु खत्म हो जाते हैं। मृदा वैज्ञानिक ने वताया कि ग्रीष्मकालीन जुताई से जलवायु का प्रभाव सुचारू रूप से मिट्टी में होने वाली प्रक्रियाओं पर पड़ता है और वायु तथा सूर्य के प्रकाश की सहायता से मिट्टी में विद्यमान खनिज अधिक सुगमता से पौधे भोजन के रूप में ले लेते हैं। इस अवसर पर केन्द्र के प्रभारी डॉ. अजय कुमार सिंह ने वताया कि किसानों को गर्मी की जुताई दो-तीन वर्ष में एक वार अवश्य कर देनी चाहिए। डॉक्टर सिंह ने वताया कि अनुसंधान के परिणामों में यह पाया गया है कि गर्मी की जुताई से भूमि कटाव में 66.5 प्रतिशत तक की कमी आई है। पशुपालन वैज्ञानिक डॉक्टर शशिकांत ने पशुओं में होने वाली वीमारियों एवं उनके प्रवंधन के वारे में विस्तार से जानकारी दी। गृह वैज्ञानिक डॉ. निमिषा अवस्थी ने लघु उद्योग के वारे में जानकारी दी, जवकि गौरव शुक्ला ने प्रशिक्षण कार्यक्रम सफल वनाने में विशेष सहयोग प्रदान किया। इस अवसर पर 50 से अधिक किसानों ने सहभागिता की।

1/8

email: shahardayaranews@gmail.com

दैनिक

शहर दायरा न्यूज

हिन्दी/अंग्रेजी द्विभाषीय

https://www.facebook.com/shahardayaranews/

वर्ष 9 अंक: 277 | कानपुर, बुधवार 29 मई 2024 | पृष्ठ: 8 | मूल्य-2.00 ₹

गर्मी की गहरी जुताई हेतु कृषकों को दिया गया प्रशिक्षण

शहर दायरा न्यूज

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉ.आनंद कुमार सिंह के निर्देश के क्रम में कृषि विज्ञान केंद्र दलीप नगर द्वारा ग्राम औरंगपुर गहदेवा में कृषकों को गर्मी की गहरी जुताई विषय पर एक दिवसीय कृषक प्रशिक्षण आयोजित किया गया। इस अवसर पर मृदा वैज्ञानिक डा. खलील ख़ान ने बताया कि ग्रीष्मकालीन गहरी जुताई अपने खाली खेतों में अवश्य करें डॉक्टर खान ने बताया कि आगामी फसल से अच्छी पैदावार लेने के लिए रबी फसल की कटाई के तुरंत बाद गहरी जुताई कर ग्रीष्म ऋतु में खेत को खाली रखना लाभप्रद होता है। उन्होंने कहा कि जहां तक संभव हो सके किसान भाई मिट्टी पलटने वाले हल से गहरी जुताई कर दें खाली खेत में गहरी जुताई मई माह में अवश्य कर लें इस गहरी जुताई से जो ढेला बनते हैं वे धीरे-धीरे हवा व बरसात के पानी से टूटते रहते हैं साथ ही जुताई से मिट्टी की सतह पर पड़ी फसल अवशेष की पत्तियां पौधों की जड़ें एवं खेत में उगे हुए खरपतवार आदि नीचे तक जाते हैं जो सड़ने के बाद खेत की मिट्टी में कार्बनिक खादों, जीवांश पदार्थ की मात्रा में बढ़ोतरी करते हैं इससे भूमि में वायु संचार एवं जल धारण क्षमता बढ़ जाती है गहरी जुताई से गर्मी में तेज धूप के कारण कीड़े मकोड़े एवं बीमारियों के जीवाणु खत्म हो जाते हैं मृदा वैज्ञानिक ने बताया कि ग्रीष्मकालीन जुताई से जलवायु का प्रभाव सुचारु रुप से मिट्टी में होने वाली प्रक्रियाओं पर पड़ता है और वायु तथा सूर्य के प्रकाश की सहायता से मिट्टी में विद्यमान खनिज अधिक सुगमता से पौधे भोजन के रूप में ले लेते हैं इस अवसर पर केन्द्र के प्रभारी डा.अजय कुमार सिंह ने बताया कि किसान भाइयों को गर्मी की जुताई दो-तीन वर्ष में एक बार अवश्य कर देनी चाहिए डॉक्टर सिंह ने बताया कि अनुसधान के परिणामों में यह पाया गया है कि गर्मी की जुताई से भूमि कटाव में 66.5ब तक की कमी आई है पशुपालन वैज्ञानिक डॉक्टर शशिकांत पशुओं में होने वाली बीमारियों एवं उनके प्रबंधन के बारे में विस्तार से जानकारी दी गृह वैज्ञानिक डा निमिषा अवस्थी ने लघु उद्योग के बारे में जानकारी दी जबकि गौरव शुक्ला ने प्रशिक्षण कार्यक्रम सफल बनाने में विशेष सहयोग प्रदान किया किसान उपस्थित रहे इस अवसर पर 50 से अधिक किसानों ने सहभागिता की।

हिंदी दैनिक

रहस्य संदेश

-150 लखनऊ व एटा से प्रकाशित बुधवार, 29 मई 2024 R.N.I. No.: UPHIN/2007/20715 पृष्ठ- 4

कानपुर–गर्मी की गहरी जुताई हेतु कृषकों को दिया गया प्रशिक्षण

अनवर अशरफ

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉ.आनंद कुमार सिंह के निर्देश के क्रम में कृषि विज्ञान केंद्र दलीप नगर द्वारा ग्राम औरंगपुर गहदेवा में कृषकों को गर्मी की गहरी जुताई विषय पर एक दिवसीय कृषक प्रशिक्षण आयोजित किया गया। इस अवसर पर मृदा वैज्ञानिक डा.खलील ख़ान ने बताया कि ग्रीष्मकालीन गहरी जुताई अपने खाली खेतों में अवश्य करें। डॉक्टर खान ने बताया कि आगामी फसल से अच्छी पैदावार लेने के लिए रबी फसल की कटाई के तुरंत बाद गहरी जुताई कर ग्रीष्म ऋतु में खेत को खाली रखना लाभप्रद होता है। उन्होंने कहा कि जहां तक संभव हो सके किसान भाई मिट्टी पलटने वाले हल से गहरी जुताई कर दें। खाली खेत में गहरी जुताई मई माह में अवश्य कर लें। इस गहरी जुताई से जो ढेला बनते हैं वे धीरे-धीरे हवा व बरसात के पानी से टूटते रहते हैं। साथ ही जुताई से मिट्टी की सतह पर पड़ी फसल अवशेष की पत्तियां पौधों की जड़ें एवं खेत में उगे हुए खरपतवार आदि नीचे तक जाते हैं। जो सड़ने के बाद खेत की मिट्टी में कार्बनिक खादों/ जीवांश पदार्थ की मात्रा में बढ़ोतरी करते हैं इससे भूमि में वायु संचार एवं जल धारण क्षमता बढ़ जाती है। गहरी जुताई से गर्मी में तेज धूप के कारण कीड़े मकोड़े एवं बीमारियों के जीवाणु खत्म हो जाते हैं। मृदा वैज्ञानिक ने बताया कि ग्रीष्मकालीन जुताई से जलवायु का प्रभाव सुचारु रुप से मिट्टी में होने वाली प्रक्रियाओं पर पड़ता है और वायु तथा सूर्य के प्रकाश की सहायता से मिट्टी में विद्यमान खनिज अधिक सुगमता से पौधे भोजन के रूप में ले लेते हैं। इस अवसर पर केन्द्र के प्रभारी डा.अजय कुमार सिंह ने बताया कि किसान भाइयों को गर्मी की जुताई दो-तीन वर्ष में एक बार अवश्य कर देनी चाहिए । डॉक्टर सिंह ने बताया कि अनुसधान के परिणामों में यह पाया गया है कि गर्मी की जुताई से भूमि कटाव में 66.5ब तक की कमी आई है। पशुपालन वैज्ञानिक डॉक्टर शशिकांत पशुओं में होने वाली बीमारियों एवं उनके प्रबंधन के बारे में विस्तार से जानकारी दी।गृह वैज्ञानिक डा निमिषा अवस्थी ने लघु उद्योग के बारे में जानकारी दी। जबकि गौरव शुक्ला ने प्रशिक्षण कार्यक्रम सफल बनाने में विशेष सहयोग प्रदान किया किसान उपस्थित रहे। इस अवसर पर 50 से अधिक किसानों ने सहभागिता की।

दैनिक जागरण 29/05/2024

गर्मी में पशुओं की चरी जहरीली होने का खतरा, सिंचाई जरूरी

- अधिक तापमान में चरी के पौधे करते हैं हाइड्रोजन सायनाइड का निर्माण
- खेत की सिंचाई और पौधों में पर्याप्त नमी ही है बचाव का तरीका

जासं, कानपुर : चार दिन से हो रही बेतहाशा गर्मी में अब पशुओं के हरे चारे के जहरीला होने का संकट बढ़ गया है। खेतों की सिंचाई में कमी होने पर हरे चारे में हाइड्रोजन सायनाइड का निर्माण होने लगता है। इससे पौधे की पत्तियां तक जहरीली हो ज़ाती हैं। ऐसे एक पौधे की पत्ती भी जानवरों के लिए जानलेवा बन जाती है। बीते साल जिले में हरे चारे के जहरीला बनने से एक दर्जन से ज्यादा पशुओं को उपचार के लिए पशु चिकित्सकों के पास ले जाना पड़ा है। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के निदेशक प्रसार डा. आरके यादव ने किसानों को खेत के कोने-कोने तक हफ्ते में दो से तीन सिंचाई की सलाह दी है।

नौतपा के पहले दिन 25 मई से ही जिले का तापमान 40 डिग्री से ऊपर बना हुआ है। सोमवार को अधिकतम तापमान 45 डिग्री रहा है और इसके लगातार ऊपर चढ़ने के आसार है। ऐसे में खेत पूरी तरह सूख चुके हैं। इसका प्रतिकूल असर किसानों के खेत में खड़ी हरे चारे की फसल पर हो रहा है। सीएसए के कृषि विज्ञानी डा. यादव ने बताया कि गर्मियों में पशुओं को हरा चारा खिलाते समय सबसे पहले यह देख लें कि उसकी पत्तियां सुकड़ी तो नहीं हैं। ऐसी पत्तियों वाले हरे चारे में पानी की कमी से हाइड्रोजन सायनाइड बन जाता है। जो पशुओं के लिए जानलेवा है। अगर घंटेभर में उपचार न मिले तो पशुओं की जान तक चली जाती है। मुख्य पशु चिकित्सा अधिकारी डा. आइडीएन चतुर्वेदी ने बताया कि जहरीले हरे चारे का सबसे बड़ा खतरा गोचारण के लिए घर से बाहर गए पशु के साथ होता है। पशुपालक को भी इसके बारे में जानकारी नहीं होती कि उसने जहरीला हरा चारा खा लिया है। हरा चारा खाने से बीमार पशु को पानी नहीं देना चाहिए। बाजार में मिलने वाला हाइपो पाउडर 100 ग्राम को एक लीटर पानी में घोलकर तुरंत पिलाना चाहिए, फिर पशु चिकित्सक से उपचार कराना चाहिए।

सत्य का असर समाचार पत्र

29th May 2024 jksingh.hardoi@gmail.com मोबाइल नंबर 9956834016

गर्मी की गहरी जुताई हेतु कृषकों को दिया गया प्रशिक्षण

वरिष्ठ पत्रकार जितेंद्र सिंह पटेल

सत्य का असर समाचार पत्र कानपुर

चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉ.आनंद कुमार सिंह के निर्देश के क्रम में कृषि विज्ञान केंद्र दलीप नगर द्वारा ग्राम औरंगपुर गहदेवा में कृषकों को गर्मी की गहरी जुताई विषय पर एक दिवसीय कृषक प्रशिक्षण आयोजित किया गया। इस अवसर पर मृदा वैज्ञानिक डा.खलील ख़ान ने बताया कि ग्रीष्मकालीन गहरी जुताई अपने खाली खेतों में अवश्य करें। डॉक्टर खान ने बताया कि आगामी फसल से अच्छी पैदावार लेने के लिए रबी फसल की कटाई के तुरंत बाद गहरी जुताई कर ग्रीष्म ऋतु में खेत को खाली रखना लाभप्रद होता है। उन्होंने कहा कि जहां तक संभव हो सके किसान भाई मिट्टी पलटने वाले हल से गहरी जुताई कर दें। खाली खेत में गहरी जुताई मई माह में अवश्य कर लें। इस गहरी जुताई से जो ढेला बनते हैं वे धीरे-धीरे हवा व बरसात के पानी से टूटते रहते हैं। साथ ही जुताई से मिट्टी की सतह पर पड़ी फसल अवशेष की पत्तियां पौधों की जड़ें एवं खेत में उगे हुए खरपतवार आदि नीचे तक जाते हैं। जो सड़ने के बाद खेत की मिट्टी में कार्बनिक खादों/ जीवांश पदार्थ की मात्रा में बढ़ोतरी करते हैं इससे भूमि में वायु संचार एवं जल धारण क्षमता बढ़ जाती है। गहरी जुताई से गर्मी में तेज धूप के कारण कीड़े मकोड़े एवं बीमारियों के जीवाणु खत्म हो जाते हैं। मृदा वैज्ञानिक ने बताया कि ग्रीष्मकालीन जुताई से जलवायु का प्रभाव सुचारु रुप से मिट्टी में होने वाली प्रक्रियाओं पर पड़ता है और वायु तथा सूर्य के प्रकाश की सहायता से मिट्टी में विद्यमान खनिज अधिक सुगमता से पौधे भोजन के रूप में ले लेते हैं। इस अवसर पर केन्द्र के प्रभारी डा.अजय कुमार सिंह ने बताया कि किसान भाइयों को गर्मी की जुताई दो-तीन वर्ष में एक बार अवश्य कर देनी चाहिए । डॉक्टर सिंह ने बताया कि अनुसधान के परिणामों में यह पाया गया है कि गर्मी की जुताई से भूमि कटाव में 66.5% तक की कमी आई है। पशुपालन वैज्ञानिक डॉक्टर शशिकांत पशुओं में होने वाली बीमारियों एवं उनके प्रबंधन के बारे में विस्तार से जानकारी दी।गृह वैज्ञानिक डा निमिषा अवस्थी ने लघु उद्योग के बारे में जानकारी दी। जबकि गौरव शुक्ला ने प्रशिक्षण कार्यक्रम सफल बनाने में विशेष सहयोग प्रदान किया किसान उपस्थित रहे। इस अवसर पर 50 से अधिक किसानों ने सहभागिता की।

News Banner Maker

दैनिक
उद्योग नगरी टाइम्स
E-mail : dainikudyognagritimes@gmail.com
सत्य ही कर्तव्य
(हिन्दी दैनिक प्रातःकालीन) कानपुर, बुधवार 29 मई 2024 (R.N.I.No. UPHIN/2010/47220)

गर्मी की गहरी जुताई हेतु कृषकों को दिया गया प्रशिक्षण

कानपुर, 28 मई (यू0एन0टी0)। अनवर अशरफ चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉ.आनंद कुमार सिंह के निर्देश के क्रम में कृषि विज्ञान केंद्र दलीप नगर द्वारा ग्राम औरंगपुर गहदेवा में कृषकों को गर्मी की गहरी जुताई विषय पर एक दिवसीय कृषक प्रशिक्षण आयोजित किया गया। इस अवसर पर मृदा वैज्ञानिक डा. खलील ख़ान ने बताया कि ग्रीष्मकालीन गहरी जुताई अपने खाली खेतों में अवश्य करें। डॉक्टर खान ने बताया कि आगामी फसल से अच्छी पैदावार लेने के लिए रबी फसल की कटाई के तुरंत बाद गहरी जुताई कर ग्रीष्म ऋतु में खेत को खाली रखना लाभप्रद होता है। उन्होंने कहा कि जहां तक संभव हो सके किसान भाई मिट्टी पलटने वाले हल से गहरी जुताई कर दें। खाली खेत में गहरी जुताई मई माह में अवश्य कर लें। इस गहरी जुताई से जो ढेला बनते हैं वे धीरे–धीरे हवा व बरसात के पानी से टूटते रहते हैं। साथ ही जुताई से मिट्टी की सतह पर पड़ी फसल अवशेष की पत्तियां पौधों की जड़ें एवं खेत में उगे हुए खरपतवार आदि नीचे तक जाते हैं। जो सड़ने के बाद खेत की मिट्टी में कार्बनिक खादों जीवांश पदार्थ की मात्रा में बढ़ोतरी करते हैं इससे भूमि में वायु संचार एवं जल धारण क्षमता बढ़ जाती है। गहरी जुताई से गर्मी में तेज धूप के कारण कीड़े मकोड़े एवं बीमारियों के जीवाणु खत्म हो जाते हैं। मृदा वैज्ञानिक ने बताया कि ग्रीष्मकालीन जुताई से जलवायु का प्रभाव सुचारु रुप से मिट्टी में होने वाली प्रक्रियाओं पर पड़ता है और वायु तथा सूर्य के प्रकाश की सहायता से मिट्टी में विद्यमान खनिज अधिक सुगमता से पौधे भोजन के रूप में ले लेते हैं। इस अवसर पर केन्द्र के प्रभारी डा.अजय कुमार सिंह ने बताया कि किसान भाइयों को गर्मी की जुताई दो–तीन वर्ष में एक बार अवश्य कर देनी चाहिए। डॉक्टर सिंह ने बताया कि अनुसधान के परिणामों में यह पाया गया है कि गर्मी की जुताई से भूमि कटाव में 66.5 प्रतिशत तक की कमी आई है। पशुपालन वैज्ञानिक डॉक्टर शशिकांत पशुओं में होने वाली बीमारियों एवं उनके प्रबंधन के बारे में विस्तार से जानकारी दी। गृह वैज्ञानिक डा निमिषा अवस्थी ने लघु उद्योग के बारे में जानकारी दी। जबकि गौरव शुक्ला ने प्रशिक्षण कार्यक्रम सफल बनाने में विशेष सहयोग प्रदान किया किसान उपस्थित रहे। इस अवसर पर 50 से अधिक किसानों ने सहभागिता की।

खेतों में गहरी जुताई करें किसान फसलों की पैदावार बढ़ेगी

(आज समाचार सेवा)

कानपुर, 28 मई। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉ.आनंद कुमार सिंह के निर्देश के क्रम में कृषि विज्ञान केंद्र दलीप नगर द्वारा ग्राम औरंगपुर गहदेवा में कृषकों को गर्मी की गहरी जुताई विषय पर एक दिवसीय कृषक प्रशिक्षण आयोजित किया गया। इस अवसर पर मृदा वैज्ञानिक डा.खलील खान ने बताया कि ग्रीष्मकालीन गहरी जुताई अपने खाली खेतों में अवश्य करें। डॉक्टर खान ने बताया कि आगामी फसल से अच्छी पैदावार लेने के लिए रबी फसल की कटाई के तुरंत बाद गहरी जुताई कर ग्रीष्म ऋतु में खेत को खाली रखना लाभप्रद होता है। उन्होंने कहा कि जहां तक संभव हो सके किसान भाई मिट्टी पलटने वाले हल से गहरी जुताई कर दें। खाली खेत में गहरी जुताई मई माह में अवश्य कर लें। इस गहरी जुताई से जो ढेला बनते हैं वे धीरे-धीरे हवा व बरसात के पानी से टूटते रहते हैं। साथ ही जुताई से मिट्टी की सतह पर पड़ी फसल अवशेष की पत्तियां पौधों की जड़ें एवं खेत में उगे हुए खरपतवार आदि नीचे तक जाते हैं। जो सड़ने के बाद खेत की मिट्टी में कार्बनिक खादों/ जीवांश पदार्थ की मात्रा में बढ़ोतरी करते हैं इससे भूमि में वायु संचार एवं जल धारण क्षमता बढ़ जाती है। गहरी जुताई से गर्मी में तेज धूप के कारण कीड़े मकोड़े एवं बीमारियों के जीवाणु खत्म हो जाते हैं। मृदा वैज्ञानिक ने बताया कि ग्रीष्मकालीन जुताई से जलवायु का प्रभाव सुचारू रूप से मिट्टी में होने वाली प्रक्रियाओं पर पड़ता है और वायु तथा सूर्य के प्रकाश की सहायता से मिट्टी में विद्यमान खनिज अधिक सुगमता से पौधे भोजन के रूप में ले लेते हैं। इस अवसर पर केन्द्र के प्रभारी डा.अजय कुमार सिंह ने बताया कि किसान भाइयों को गर्मी की जुताई दो-तीन वर्ष में एक बार अवश्य कर देनी चाहिए । डॉ सिंह ने बताया कि अनुसधान के परिणामों में यह पाया गया है कि गर्मी की जुताई से भूमि कटाव में 66.5 प्रतिशत तक की कमी आई है।

1/10
वर्ष-3, अंक-271, पृष्ठः 10
मूल्यः एक रुपये

राष्ट्रीय हिंदी दैनिक

RNI/NO/UPHIN49792/16/4/2021

सच की अहमियत

हर सवेरे नया जोश

कानपुर | बुधवार, 29 मई 2024 | कानपुर, लखनऊ, उत्तराखंड से एक साथ प्रकाशित | सूचना प्रसारण मंत्रालय एवं भारत सरकार द्वारा रजिस्टर्ड

गर्मी की गहरी जुताई हेतु कृषकों को दिया गया प्रशिक्षण

पंकज अवस्थी, सच की अहमियत

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉ.आनंद कुमार सिंह के निर्देश के क्रम में कृषि विज्ञान केंद्र दलीप नगर द्वारा ग्राम औरंगपुर गहदेवा में कृषकों को गर्मी की गहरी जुताई विषय पर एक दिवसीय कृषक प्रशिक्षण आयोजित किया गया। इस अवसर पर मृदा वैज्ञानिक डा.खलील खान ने बताया कि ग्रीष्मकालीन गहरी जुताई अपने खाली खेतों में अवश्य करें। डॉक्टर खान ने बताया कि आगामी फसल से अच्छी पैदावार लेने के लिए रबी फसल की कटाई के तुरंत बाद गहरी जुताई कर ग्रीष्म ऋतु में खेत को खाली रखना लाभप्रद होता है। उन्होंने कहा कि जहां तक संभव हो सके किसान भाई मिट्टी पलटने वाले हल से गहरी जुताई कर दें। खाली खेत में गहरी जुताई मई माह में अवश्य कर लें। इस गहरी जुताई से जो ढेला बनते हैं वे धीरे-धीरे हवा व बरसात के पानी से टूटते रहते हैं। साथ ही जुताई से मिट्टी की सतह पर पड़ी फसल अवशेष की पत्तियां पौधों की जड़ें एवं खेत में उगे हुए खरपतवार आदि नीचे तक जाते हैं। जो सड़ने के बाद खेत की मिट्टी में कार्बनिक खादों/ जीवांश पदार्थ की मात्रा में बढ़ोतरी करते हैं इससे भूमि में वायु संचार एवं जल धारण क्षमता बढ़ जाती है। गहरी जुताई से गर्मी में तेज धूप के कारण कीड़े मकोड़े एवं बीमारियों के जीवाणु खत्म हो जाते हैं। मृदा वैज्ञानिक ने बताया कि ग्रीष्मकालीन जुताई से जलवायु का प्रभाव सुचारु रुप से मिट्टी में होने वाली प्रक्रियाओं पर पड़ता है और वायु तथा सूर्य के प्रकाश की सहायता से मिट्टी में विद्यमान खनिज अधिक सुगमता से पौधे भोजन के रूप में ले लेते हैं। इस अवसर पर केन्द्र के प्रभारी डा.अजय कुमार सिंह ने बताया कि किसान भाइयों को गर्मी की जुताई दो-तीन वर्ष में एक बार अवश्य कर देनी चाहिए । डॉक्टर सिंह ने बताया कि अनुसधान के परिणामों में यह पाया गया है कि गर्मी की जुताई से भूमि कटाव में 66.5त्न तक की कमी आई है। पशुपालन वैज्ञानिक डॉक्टर शशिकांत पशुओं में होने वाली बीमारियों एवं उनके प्रबंधन के बारे में विस्तार से जानकारी दी।गृह वैज्ञानिक डा निमिषा अवस्थी ने लघु उद्योग के बारे में जानकारी दी। जबकि गौरव शुक्ला ने प्रशिक्षण कार्यक्रम सफल बनाने में विशेष सहयोग प्रदान किया किसान उपस्थित रहे। इस अवसर पर 50 से अधिक किसानों ने सहभागिता की।

/12

अमर भारती
एक उम्मीद
स्करण
ल्यः 03 रु. RNI No. UPHIN/2011/46455 www.amarbharti.com बुधवार, 29 मई 2024 शक सम्

किसानों को दिया गया प्रशिक्षण

अमर भारती ब्यूरो

कानपुर। सीएसए के कुलपति डॉ.आनंद कुमार सिंह के निर्देश के क्रम में कृषि विज्ञान केंद्र दलीप नगर द्वारा ग्राम औरंगपुर गहदेवा में कृषकों को गर्मी की गहरी जुताई विषय पर एक दिवसीय कृषक प्रशिक्षण आयोजित किया गया। इस अवसर पर मृदा वैज्ञानिक डा.खलील ख़ान ने बताया कि ग्रीष्मकालीन गहरी जुताई अपने खाली खेतों में अवश्य करें। डॉक्टर खान ने बताया कि आगामी फसल से अच्छी पैदावार लेने के लिए रबी फसल की कटाई के तुरंत बाद गहरी जुताई कर ग्रीष्म ऋतु में खेत को खाली रखना लाभप्रद होता है।

उन्होंने कहा कि जहां तक संभव हो सके किसान भाई मिट्टी पलटने वाले हल से गहरी जुताई कर दें। खाली खेत में गहरी जुताई मई माह में अवश्य कर लें। इस गहरी जुताई से जो ढेला बनते हैं वे धीरे-धीरे हवा व बरसात के पानी से टूटते रहते हैं। साथ ही जुताई से मिट्टी की सतह पर पड़ी फसल अवशेष की पत्तियां पौधों की जड़ें एवं खेत में उगे हुए खरपतवार आदि नीचे तक जाते हैं। जो सड़ने के बाद खेत की मिट्टी में कार्बनिक खादों/ जीवांश पदार्थ की मात्रा में बढ़ोतरी करते हैं इससे भूमि में वायु संचार एवं जल धारण क्षमता बढ़ जाती है। गहरी जुताई से गर्मी में तेज धूप के कारण कीड़े मकोड़े एवं बीमारियों के जीवाणु खत्म हो जाते हैं। मृदा वैज्ञानिक ने बताया कि ग्रीष्मकालीन जुताई से जलवायु का प्रभाव सुचारु रुप से मिट्टी में होने वाली प्रक्रियाओं पर पड़ता है और वायु तथा सूर्य के प्रकाश की सहायता से मिट्टी में विद्यमान खनिज अधिक सुगमता से पौधे भोजन के रूप में ले लेते हैं। इस अवसर पर केन्द्र के प्रभारी डा.अजय कुमार सिंह ने बताया कि किसान भाइयों को गर्मी की जुताई दो-तीन वर्ष में एक बार अवश्य कर देनी चाहिए । डॉक्टर सिंह ने बताया कि अनुसंधान के परिणामों में यह पाया गया है कि गर्मी की जुताई से भूमि कटाव में 66.5त्न तक की कमी आई है। पशुपालन वैज्ञानिक डॉक्टर शशिकांत पशुओं में होने वाली बीमारियों एवं उनके प्रबंधन के बारे में विस्तार से जानकारी दी। गृह वैज्ञानिक डा निमिषा अवस्थी ने लघु उद्योग के बारे में जानकारी दी। जबकि गौरव शुक्ला ने प्रशिक्षण कार्यक्रम सफल बनाने में विशेष सहयोग प्रदान किया किसान उपस्थित रहे। इस अवसर पर 50 से अधिक किसानों ने सहभागिता की।